

आज का पुरुषार्थ 19 July 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – " आज हम कर्मयोगी बन कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाये "

कर्म तो मनुष्य प्रति पल कर रहा है। परन्तु जो मनुष्य **अनासक्त भाव** से कर्म करता है, जो मनुष्य detach होकर कर्म करता है, जो मनुष्य आत्मिक स्वरूप में और **आत्मिक भाव** में स्थित रहकर कर्म करता है वह सचमुच एक अलौकिक मनुष्य है।

और उसमें भी जो मनुष्य **योगयुक्त** होकर कर्म करता है उसमें तो यह सारी क्लोयालिटीज स्वतः ही आ जाती है।

योगयुक्त होकर कर्म करना एक कला है। **श्रीमत् भागवत गीता में भी है :**

" हे अर्जुन ! तुम अपनी बुद्धि को मेरे स्वरूप पर स्थिर रखते हुए कर्म करो। यही वास्तव में कर्मयोग है "

बाबा ने इसे हमें बहुत सहज बनाकर दिये है। भिन्न भिन्न अभ्यास हमें सीखा दिया है। ताकि **कर्मयोग** हमारे लिए बहुत सहज हो जाये।

संसार में कई लोग समझते है हम अच्छे कर्म करे। दुनिया भी कहते है यह व्यक्ति **कर्मयोगी** है। लेकिन जब तक **योगयुक्त** नहीं है, तब तक कोई भी मनुष्य कर्मयोगी नहीं कहलाते।

यदि हम कर्मयोगी नहीं है तो हमें हर कर्म का गहरा और बुरा और निगेटिव इफ़ेक्ट हमारे ऊपर पड़ेगा। हर कर्म हम पर बंधन डालेगा और हम **कर्मातीत अवस्था** के ओर नहीं जा सकेंगे।

लेकिन यदि हम योगयुक्त होकर कर्म करते है, तो हर कर्म हमें **energy** देता है। हर कर्म बहुत बड़ा **पुण्य** बन जाता है। हर कर्म हमारे लिए जैसे संसार में प्रेरणा देने वाला हो जाता है।

और जब हम योगयुक्त होकर कर्म करते है, अर्थात हम यह मेहसूस करते है कि बाबा हमारे साथ है, तो उनकी **शक्तियाँ** हमसे जुड़ जाती है। डबल फोर्स कार्य करता है।

यह डबल force है .. हमारी शक्ति और बाबा की शक्ति। दोनों combined हो जाता है। और बहुत जल्दी कार्य पूर्ण हो जाते है।

इसलिए **सहज भाव** से कर्म करना सीखें। कर्मयोगी वही बन सकते है, जो कर्म कॉन्शास न हो। जो टाइम कॉन्शास न हो। टाइम पे कर्म करना अच्छी बात है ..

लेकिन **time conscious** हो जाना, बार-बार घड़ी देखना, दुसरो को भी बार-बार कहना टाइम पे करो, जल्दी-जल्दी करो। यह कर्म कॉन्शासनेस टेन्शन पैदा करती है। और कर्म कॉन्शास होने से मनुष्य सबकुछ भूल जाता है।

यद्यपि कर्म में पूरी तरह तल्लीनता होना भी परम आवश्यक है। **लेकिन** इतनी तल्लीनता नहीं के हम **बाबा** को ही भूल जाये !

तो आइये, सहज भाव से कर्म करने की प्रैक्टिस करे। हम अपने कर्मों को enjoy करे। कर्म ऐसे करे मानों खुशी में झूम रहे हो। आनंद ले कर्मों का।

ऐसी mentality हम बनाते चले अपनी के हमें अपने कर्म बहुत आनन्द पूर्वक, बहुत प्रसन्नता पूर्वक करने है।

तो कर्म में क्या क्या हम अभ्यास करें ?

" मैं आत्मा इस देह में बैठकर इससे कर्म करा रही हूँ .. मैं कराने वाली हूँ "

दुसरा ..

" बाबा की शक्तियाँ मेरे साथ जुड़ी हुई है .. बाबा मेरे साथ है "

इसको बार-बार याद करते रहे। स्टूडेंट्स भी यदि आप है तो बार-बार याद करते रहे ..

" बाबा मेरे साथ है "

किसी कर्म में स्वमान की अच्छी अच्छी अभ्यास करे।

" मैं पूर्वज हूँ "

" मैं इष्ट देव-देवी हूँ "

" मैं जहाँ का नूर हूँ "

" मैं कल्पवृक्ष की जड़ें हूँ "

स्वमान चुन ले जो जो आपको अच्छा लगे। और उनको याद करते रहें।

अगला अभ्यास हम करेंगे ..

" बुद्धि हमारी बाबा के स्वरूप पर स्थिर है, और यहाँ हम कर्म कर रहे है "

जिनको बहुत अच्छा अभ्यास है वह यह अभ्यास करे। और कभी अभ्यास करे →

" बाबा की किरणें मुझ पर पड़ रही है "

तो कभी अभ्यास करे ..

" मैं फ़रिश्ता कार्य कर रहा हूँ "

इस तरह हम कर्मयोग की प्रैक्टिस करे और कर्मातीत अवस्था की ओर चलें।

तो आइये आज सारा दिन हम यह स्वमान अभ्यास करें ...

" मैं जहाँ का नूर हूँ .. मैं इस जहाँ की शोभा हूँ .. मेरा इस संसार में उपस्थित होना बहुत महत्वपूर्ण है "

और साथ में अभ्यास करे ...

" बाबा की किरणें निरंतर मुझ पर पड़ रही है .. शक्तियों का फाउन्टेन मुझ पर उतर रहा है "

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org